1

मुग़ल बादशाह अकबर

(सन 1556-1605)

भारत में मुग़ल वंश के राज्य की शुरुआत

ऊपर युद्ध के लिए तैयार एक सेना का चित्र है। इन सैनिकों के पास कई ऐसे हथियार हैं जिनके बारे में तुमने पहले के पाठों में नहीं पढ़ा है। क्या तुम इन नए हथियारों को पहचान सकते हो?

यह सेना थी मुग़ल वंश के बादशाह बाबर की। बाबर का राज्य अफ़ग़ानिस्तान मे था। वह अपना राज्य बढ़ाने की कोशिश में लगा था। उन दिनों देहली पर अफ़ग़ान सुल्तान इब्राहिम लोदी का शासन था। 1526 में बाबर ने अपनी सेना, तोपों और बन्दूकों के साथ पानीपत नाम की जगह पर देहली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को लड़ाई मे बुरी तरह हरा दिया।

बाबर के अधिकारी भारत के सुल्तानों के खज़ाने हथियाने के बाद अफ़ग़ानिस्तान वापस लौट जाना चाहते थे। पर बाबर हिन्दुस्तान में ही रह कर अपना राज्य बनाना चाहता था। उसने अपने अधिकारियों को काफी समझा बुझाकर हिन्दुस्तान मे राज्य बनाने के लिए राज़ी कर लिया। इसके बाद बाबर ने कई ताकतवर अफ़ग़ान

सरदारो व राजपूत राजाओं से कई लड़ाइयां लड़ीं।

सन् 1530 में बाबर की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा हुमायूं बादशाह बना। उसे बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। 1540 में अफग़ान सुल्तान शेर शाह सूरी ने उसे हराकर हिन्दुस्तान से खदेड़ दिया। लेकिन सन् 1555 में हुमायूं फिर से लौटकर आया और अपना राज्य दुबारा बनाना शुरू किया। मगर उसी वर्ष अचानक उसका देहांत हो गया।

बाबर और उसके अमीर

बादशाह अकबर और उसके अमीर

अकबर बादशाह बना

यह वह स्थिति थी जब हिन्दुस्तान में मुग़ल वंश का राज्य ठीक से जम भी नही पाया था। चारो तरफ से दूसरे राजा व सुल्तान मुग़लो को खदेड़ने पर तुले थे। इस समय हुमायूं का 13 साल का बेटा अकबर बादशाह बना। उसकी छोटी उम्र को देखते हुए मुग़लो के एक प्रमुख अधिकारी बैरम खान ने शासन का काम चलाया और अकबर को राजकाज की शिक्षा देने का इन्तज़ाम किया।

जब अकबर 17 साल का हुआ तब उसने राजकाज की बागडोर अपने हाथो में ले ली। अकबर ने दूसरे राज्यो को जीत कर मुग़लो के राज्य को बढ़ाने व मज़बूत बनाने की कोशिश की और इसमे उसे बहुत सफलता भी मिली।

मालवा और गढ़ा कटंगा राज्यों पर विजय

उन दिनो आज के मध्यप्रदेश के इलाके में दो महत्वपूर्ण राज्य थे। एक राज्य था मालवा के सुल्तान बाज़ बहादुर का जिसकी राजधानी माण्डू थी। माण्डू धार शहर के पास है। दूसरा प्रमुख राज्य गढ़ा कटंगा था। इसकी राजधानी थी चौरागढ़। यह आज के जबलपुर शहर के पास थी। गढ़ा कटंगा गोंड राजाओं का राज्य था। अकबर के समय में यहां रानी दुर्गावती शासन करती थीं।

1561 में अकबर के मुंह बोले भाई आदम खां को मालवा पर चढ़ाई करने के लिए भेजा गया। मालवा का सुलतान बाज़ बहादुर मुग़लो से बुरी तरह हार गया। वह माण्डू से भाग निकला और कई सालो तक अपना राज्य वापस जीतने की कोशिश करता रहा। पर अंत में वह इस कोशिश में असफल रहा और उसने मुग़लो की सेवा स्वीकार कर ली। वह एक मुग़ल अधिकारी बना दिया गया।

आदम खां ने मालवा से बहुत कीमती धन हासिल किया। पर उसने यह सारा धन अकबर को नही सौंपा। बहुत सी बहुमूल्य चीज़ें वह खुद हड़प जाना चाहता था। अकबर को जब यह पता चला तो वह बेहद नाराज़ हुआ और उसने आदम खां से ज़बरदस्ती सारा धन वसूल किया।

पर बादशाह से बेईमानी करने वाला आदम खां अकेला मुग़ल अधिकारी नही था। उन्ही दिनो एक दूसरे अधिकारी आसफ खां ने गढ़ा कटंगा राज्य पर चढ़ाई की और रानी दुर्गावती को हराया। रानी ने

ज़ख्मी होने के बावजूद बहुत हिम्मत से युद्ध किया। पर अपनी सेना को हारता देख उसने अपने आपको मार डाला। आसफ खां ने गढ़ा कटंगा से हीरे, जवाहरात, सोने, चांदी की बहुमूल्य चीज़ें हड़पी। इस अपार धन में से उसने अकबर को सिर्फ 200 हाथी भेजे। एक बार फिर अकबर को अपने एक अधिकारी की मनमानी और बेईमानी से सख्ती बरतनी पड़ी। उसने आसफ खां को सारा धन बादशाह के हवाले करने पर मज़बूर किया।

अकबर समझ रहा था कि उसके अधिकारियों की ये हरकतें उसके लिए बहुत बड़ी समस्या बन जाएंगी। वह अपने अधिकारियों को किसी भी तरह इतनी खुली छूट नहीं देना चाहता था। वह जानता था कि अगर अधिकारियों को मनमानी करने की छूट मिले तो वह मुग़ल साम्राज्य को वैसा मज़बूत नहीं बना सकता जैसा कि वह चाहता था।

अकबर के अमीरों ने कौन-कौन से राज्यों को जीता?
इन अमीरों ने ऐसा क्या किया कि अकबर उनसे नाराज़ हुआ ?

अकबर और तुरानी अमीरों के झगड़े

अकबर जब 1556 में बादशाह बना तो उसके शासन में 51 बड़े अधिकारी या दरबारी थे। इन बड़े अधिकारियों को अमीर कहा जाता था और वे वास्तव में बहुत धनी हुआ करते थे। अकबर ने अपने राज्य के अलग-अलग इलाकों का कार्यभार इन अमीरों के बीच बांट दिया था। हर अमीर अपने साथ एक सेना रखता था जिसे बादशाह के आदेश पर बादशाह के सामने प्रस्तुत किया जाता था।

इस सब के बदले में बादशाह ने अमीरों को कई गांव-शहरों की जागीरें दी हुई थी। अमीर अपनी जागीर के गांव-शहरों से मिलने वाली लगान का धन अपने लिए व अपनी जागीर का शासन चलाने के लिए रख लेते थे। अकबर इन अमीरों के सहयोग से अपना राज्य चलाने की कोशिश कर रहा था। पर उसे इनका पूरा समर्थन नहीं मिल पा रहा था। इसका क्या कारण था?

अकबर के अमीरों में से कुछ ईरान के थे और वे ईरानी अमीर कहलाते थे। पर अधिकांश अमीर तुरान नाम के क्षेत्र से आए हुए थे, जो कि तुर्किस्तान में है। मुग़ल बादशाहों के पूर्वज भी तुरान के ही थे। कई तुरानी अमीरों का तो अकबर के खानदान से रिश्ता भी था।

इस वजह से तुरानी अमीर अपने आप को मुग़ल बादशाह के बराबर का मानते थे और वे अकबर से दब कर नहीं रहना चाहते थे। वे चाहते थे कि वे अपनी-अपनी जागीर को मन-मुताबिक भोगें, और उन्हें पूरी छूट हो कि वे अपनी जागीरों में जैसा चाहें वैसा व्यवहार करें। वे यहां तक चाहते थे कि सब मामलों में बादशाह उनके कहे अनुसार ही चले।

पर अकबर को यह बात बिलकुल पसन्द नहीं थी। वह नहीं चाहता था कि पूरे साम्राज्य में बादशाह के बराबर कोई और हो। वह चाहता था कि उसका हुक्म सब पर चले और सब पर उसकी निगरानी रहे। वह जिसको चाहे अमीर बनाए, जिसको चाहे छोटे या बड़े किसी भी पद पर रखे। वह चाहता था कि सारे अमीर अपनी जागीरों में बादशाह द्वारा बनाए नियमों का पालन करें और बादशाह के सभी आदेशों को तुरन्त और बेहिचक मानें।

ऊपर के अंश में जो चार वाक्य तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण लगें उन्हें रेखांकित करो।

तुरानी अमीरों को अकबर की यह नीतियां बिलकुल भी सहन नहीं हुई। 1562 से 1567 तक कई तुरानी

अमीरों ने अकबर के खिलाफ विद्रोह किए। अमीर अपनी सेना लेकर अकबर पर हमला करने लगे।

अब अकबर क्या करता?

स्थिति को देखकर अकबर ने इस समस्या का एक हल ढूंढ निकाला। उसके साथ ईरानी अमीर भी थे। उसने ईरान से आए अमीरों को बढ़ावा दिया और उन्हें कई नए पद दिए। ईरानी अमीरों ने खुश होकर अकबर को पूरा सहयोग दिया। इन ईरानी अमीरों की सहायता से अकबर तुरानी अमीरों के विद्रोहों को कुचलने में सफल हुआ।

नीचे दिए वाक्य पूरे करो।
तुरानी विद्रोह का कारण था .....।
विद्रोहों को दबाने के लिए अकबर ने .....।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों (शेखज़ादों) को अमीर बनाने की कोशिश

राज्य मज़बूत बनाने में एक कठिनाई थी कि अमीर राजा की बराबरी करते थे और उसके बस में रहने से कतराते थे। इसके अलावा अकबर के सामने एक दूसरी समस्या भी थी जो धीरे-धीरे बहुत गंभीर हो गई।

वह खुद काबुल से आया था और उसके अमीर ईरान व तुरान के थे। बाहर से आए लोग आसानी से किसी जगह अपना शासन मज़बूत नहीं बना सकते थे - क्योंकि उस जगह के ताकतवर लोग विरोध करते थे। अकबर यह समझता था कि जब तक हिन्दुस्तान के शक्तिशाली और महत्वपूर्ण लोग उसका राज्य नहीं स्वीकार करेंगे, तब तक मुग़ल राज्य को हमेशा उन लोगों से खतरा बना रहेगा। उन दिनों हिन्दुस्तान में दो तरह के लोग बहुत महत्वपूर्ण थे - एक, राजपूत राजा, दूसरे ज़मीन व सम्पत्ति वाले मुसलमान परिवार जो कई सदियों से भारत में रह रहे थे। इन्हें शेखज़ादा

अजमेर के दरगाह में अकबर। भारतीय मुसलमान सूफी संतो को बहुत मानते थे। अकबर सूफियों के दरगाहों में जाने लगा।

कह कर बुलाया जाता था। अकबर चाहता था कि ये दोनों प्रकार के महत्वपूर्ण हिन्दुस्तानी परिवार उसके साथ आ जाएं। उन्हें जीतने के लिए उसने कई शेखज़ादों को अपने दरबार में पद दिए व उन्हें अपना अमीर बनाया। उसने उनके धर्म के प्रति श्रद्धा व्यक्त की।

ऊपर के चित्र में अकबर क्या कर रहा है? इसका शेखज़ादों पर क्या असर पड़ा होगा?

राजपूतों को अमीर बनाने की कोशिश

जहां तक राजपूत राजाओं की बात थी, अकबर ने पाया कि वे उसके अमीर बनना पसंद नहीं करते थे। उनकी तो इच्छा यह थी कि वे स्वतंत्र रहकर अपने राज्यों में शासन करें।

अकबर ने सोचा कि अगर वह राजपूत राजाओं को अपने दरबार में शामिल करना चाहता है तो उसे लोगों को यह दिखाना पड़ेगा कि वह हिन्दुओं के साथ कोई भेदभाव नहीं करता और सचमुच हिन्दुस्तान के लोगों के साथ मिलकर राज्य चलाना चाहता है। उन दिनों हिन्दुओं पर दो विशेष कर लगाए जाते थे - जज़िया कर और तीर्थ स्थानों की यात्रा करने पर कर। जज़िया कर बादशाह के सभी अधिकारियों व अनाथ लोगों से नहीं लिया जाता था। अकबर ने सन् 1562 में यात्रा कर हटा दिया और 1564 में हिन्दुओं से जज़िया कर लेना भी बंद कर दिया।

कुछ राजपूत राजा अकबर की इस बात से प्रभावित हुए और उसकी सेवा में आ गए। उन में से एक था राजा बारमल। वह आमेर का राजा था। (यह जगह जयपुर के पास है।) अकबर ने राजा बारमल को अपना अधिकारी बना लिया। (आगे चल कर बारमल का बेटा भगवानदास और पोता मानसिंह भी मुग़ल राज्य के बड़े अधिकारी बने।)

अकबर ने राजा बारमल को उसके सहयोग के बदले में कई रियायतें या छूट दीं। उसने बारमल को आमेर का राज्य लौटा दिया और कहा कि उसके वंशजों से भी आमेर कभी नहीं छीना जाएगा।

अकबर ने सभी राजपूत राजाओं के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अगर वे उसके अधीन हो जाते हैं तो वह उनका राज्य लौटा देगा। इसके अलावा राजपूत राजाओं को मुग़ल अमीर बनाया जायेगा। उन्हें मुग़ल

अकबर के महल में एक हिन्दू रानी की जचकी हुयी है। खुशी मनानेवालियों में राजपूत और तुर्की महिलाएं शामिल है

बादशाह की तरफ से दूर-दूर के इलाके जीतने व उनका शासन संभालने के लिए भी भेजा जाएगा। इसके बदले उन्हें हिन्दुस्तान में दूसरी जगहों पर अलग से जागीरें भी दी जायेंगी। अकबर का यह आशय था कि इस तरह की विशेष रियायतों से आकर्षित होकर राजपूत राजा उसका विरोध करना छोड़ देंगे और उसकी सेवा में आ जाएंगे।

हिन्दुस्तान के लोगों के साथ मिल कर राज्य चलाने की अपनी इच्छा को ज़ाहिर करने के लिए अकबर ने कुछ और महत्वपूर्ण कदम उठाए। उसने राजा बारमल की बेटी मणिबाई से शादी की। शादी के बाद मणिबाई को हिन्दू धर्म खुल कर मानने की इजाज़त दी। आमतौर पर लड़की को ससुराल वालों के रीतिरिवाज़ मानने पड़ते हैं। अकबर के समय से पहले सुल्तानों व बादशाहों ने जब हिन्दू लड़कियों से शादी की तब उन्हें अपना पुराना धर्म मानने की आज़ादी नहीं दी। (मणिबाई के अलावा अकबर ने कई और राजपूत स्त्रियों से शादी की थी।)

अकबर ने हिन्दुओं के प्रति धार्मिक भेदभाव मिटाने के लिए क्या-क्या कदम उठाए?
अकबर ने राजपूत राजाओं को कौन से विशेष लाभ दिए, उनकी सूची बनाओ।
अकबर ये कोशिशें क्यों कर रहा था - जो तुम्हें समझ में आया लिखो।

अब आओ, देखें कि अकबर की ये कोशिशें सफल हुईं या नहीं।

अकबर ने राजपूतों पर युद्ध छेड़ा

अकबर के व्यवहार से अधिकांश राजपूत राजा आकर्षित नहीं हुए। वे मुग़लों के अधीन हो कर नहीं, स्वतंत्र रह कर राज्य करना चाहते थे। अन्त तक वे इसी कोशिश में जूझते रहे। राजपूतों को मुग़लों के अधिकारी बनने में कई लाभ दिख रहे थे, पर ये स्वतंत्र राज्य के लाभ से अधिक तो न थे। राजपूत राजाओं का यह रुख जानकर अकबर ने तय कर लिया कि अब तो हथियारों के बल पर ही उन्हें झुकाना होगा। उसने एक-एक कर के महत्वपूर्ण राजपूत राजाओं को युद्ध में हराने की ठानी।

सन् 1568 में मेवाड़ की प्रसिद्ध राजधानी और मज़बूत किले चित्तौड़गढ़ पर हमला कर के अकबर ने उसे जीत लिया। मेवाड़ का राजा उदयसिंह हार कर भी मुग़लों के सामने झुकना नहीं चाहता था। वह बच निकला और दूसरी जगह जा कर फिर से लड़ने की तैयारी करने लगा।

चित्तौड़ की विजय के बाद जोधपुर और रणथंभोर के राजपूत राज्यों पर भी मुग़लों का अधिकार बन गया।

रणथंभोर किले पर जो आक्रमण हुआ उसका चित्र देखो। दूसरे चित्र में दिखाया है कि रणथंभोर का राजा सुजान सिंह हाड़ा अकबर की हुकूमत स्वीकार कर रहा है।

राजपूत राजा आखिर समझ गए कि वे मुग़लों से टक्कर नहीं ले सकते। दूसरी तरफ अकबर उन्हें अपने साथ शामिल करने के बदले में कई विशेष लाभ दे रहा था। इसलिए अब एक के बाद एक बहुत से राजपूत राजा मुग़लों की सेवा में आने लगे और मुग़ल अधिकारी बने।

अब उनके राज्य भी उनके पास सुरक्षित रहे। हां, यह ज़रूर था कि वे अपने राज्य में मुग़ल बादशाह की अनुमति के बगैर किले मज़बूत नहीं करवा सकते थे, अपनी सेना नहीं बढ़ा सकते थे और दूसरे राज्यों के साथ युद्ध या समझौता - दोनों ही नहीं कर सकते थे। पर इन पाबंदियों के बदले में उनके राज्यों को मुग़लों की शक्ति की सुरक्षा मिली हुई थी। उन्हें मुग़लों की सेवा में ऊंचे उठने के मौके मिले हुए थे।

रणथंभोर के किले पर मुग़ल सेना का आक्रमण।

ऐसा चित्र उस समय के चित्रकार ने बनाया। पहाड़ी पर तोप चढ़ाना ज़रूरी था। तभी तो गोला किले की ऊंची दीवारों को पार कर किले के अन्दर पहुंचेगा। मुश्किल मुक़ाबला लगता है क्योंकि तीन तोपें काफी नहीं पड़ रहीं।

बड़ी कठिनाई से एक और तोप पहाड़ी पर कैसे चढ़ाई जा रही है, देखो।

रणथंभोर के पराजित किले से निकलकर राजपूत राजा अकबर की हुकूमत स्वीकार कर रहा है।

अकबर की नीति से तुरानी-ईरानी अमीरों को परेशानी

धीरे-धीरे अकबर के शासन काल में अनेक शेखज़ादा व राजपूत उसके अधिकारी बने। राजपूतों के अलावा अन्य हिन्दू भी अकबर के दरबार में शामिल हुए। जैसे - टोडरमल (जिसे अकबर ने राजा की उपाधि दी) और बीरबल। इनके नाम व किस्से तुमने सुने होंगे।

जैसे-जैसे शेखज़ादा और राजपूत व अन्य हिन्दू अकबर के अमीर बनते गए वैसे-वैसे ईरानी व तुरानी अमीर परेशान होने लगे। शुरू में अधिकांश अमीर तुरानी या ईरानी होते थे। बादशाह को जो भी करना हो उनके सहयोग से ही कर सकता था। मगर अब स्थिति बदल गयी थी। अगर तुरानी व ईरानी अमीर विरोध भी करें तो बादशाह हिन्दुस्तानी अमीरों की सहायता से अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकता था। इस कारण तुरानी व ईरानी अमीरों में असंतोष बढ़ रहा था। उन्हें लग रहा था कि राजपूतों की वजह से उनकी शक्ति छिन रही है और अब पहले की तरह उनकी पूछ नहीं होती।

1575 में अकबर ने जज़िया कर लगाया

अकबर ईरानी-तुरानी अमीरों को शांत करने के लिए कुछ उपाय ढूंढने लगा। वह अपने राज्य में न तो राजपूतों की स्थिति कमज़ोर करना चाहता था और न ही तुरानी-ईरानी अमीरों की ताकत पहले जैसी हो जाने देना चाहता था। उसने सोचा कि अगर वह

....., ..., व अन्य राजपूत राज्य मुग़लों के अधीन हो गये।
हारे हुए राजपूत राजाओं के साथ अकबर ने क्या व्यवहार किया?

हिन्दुओं के खिलाफ कुछ बातें करे तो शायद तुरानी-ईरानी अमीर संतोष कर जाएं। वह सन् 1575 से हिन्दुओं के खिलाफ बोलने लगा। उसने हिन्दुओं पर जज़िया कर फिर से लागू कर दिया। उसने अपने कुछ अधिकारियों को यह आदेश भी दिया कि वे हिन्दुओं को मूर्ति पूजा करने से रोकें।

अकबर की धार्मिक नीति में क्या कोई परिवर्तन आया दिखता है? स्पष्ट करो।

1580 में ईरानी-तुरानी अमीरों का विद्रोह

अकबर ने हिन्दुओं के साथ भेदभाव किया, लेकिन इस सब का तुरानी व ईरानी अमीरों पर कोई असर नहीं पड़ा। सन् 1580 में इन लोगों ने अकबर के खिलाफ ज़बर्दस्त विद्रोह किया। दोनों दिशाओं में विद्रोह भड़का - काबुल में भी और बंगाल में भी।

तुम्हारे विचार में अकबर क्या करता तो ईरानी तुरानी अमीर संतुष्ट होते?

इस बार अकबर ने हिन्दुस्तानी अमीरों की सहायता से तुरानी व ईरानी अमीरों के विद्रोह को कुचला। राजा मानसिंह और भगवानदास ने काबुल का विद्रोह दबाया और टोडरमल ने बंगाल में ईरानी व तुरानी अमीरों के विद्रोह को खत्म किया। अकबर को अब कोई खतरा नहीं रहा। एक बार फिर राज्य में उसकी शक्ति को कम न किया जा सका।

ज़रा सोच कर बताओ -
1575 में अकबर ने जज़िया वापस लागू किया था। फिर भी राजपूत अमीरों ने उसका साथ दिया। वे अकबर से असंतुष्ट क्यों नहीं हुए?

इस तरह राजपूतों और शेखज़ादों (भारतीय मुसलमानों) को ईरानी व तुरानियों के साथ-साथ अपने अमीर बनाने से मुग़ल साम्राज्य को बहुत फायदा हुआ। जब ईरानी और तुरानी अमीरों ने विद्रोह किया तो अकबर ने राजपूतों और भारतीय मुसलमानों की मदद से विद्रोह को दबाया।

तुम सोचकर बताओ कि अकबर ने ईरानी और तुरानी अमीरों को दरबार से पूरी तरह क्यों नहीं निकाल दिया?

1580 के विद्रोह के बाद सुलह कुल की नीति

1580 के विद्रोह ने अकबर पर गहरा असर छोड़ा। उसे लगा कि हिन्दुओं से भेद-भाव करने के आदेश हटा लेना चाहिए क्योंकि उनसे ईरानी तुरानी अमीर तो खुश नहीं हुए और व्यर्थ में हिन्दुओं को ठेस पहुंची।

अब अकबर के धार्मिक व्यवहार में फिर से एक बड़ा बदलाव आया। 1580 में ही उसने हिन्दुओं पर लगाया गया जज़िया कर फिर से हटा दिया।

1575 में अकबर ने जज़िया कर क्यों लगाया था? 1580 में क्यों हटा दिया?

अकबर ने सब धर्मों के संतों, मंदिरों, मदरसों व मठों को दान देना शुरू कर दिया। पहले केवल मुसलमान संतों, विद्वानों व मस्जिदों को दान दिया जाता था। पर 1580 के बाद अकबर दूर-दूर के मंदिरों व मठों को भी दान देने लगा।

वैसे अकबर को दूसरे धर्मों में बहुत रुचि भी थी। कहा जाता है कि वह रात भर धार्मिक विचारों में डूबा रहता था और जो भी धार्मिक व्यक्ति आए उससे चर्चा करता था।

उसने अपने राजमहल के पास की मस्जिद में एक इबादत खाना (यानी ईश्वर का प्रार्थना घर) बनवाया था। उसने इस्लाम के प्रमुख विद्वानों यानी मौलवियों को बुला कर इबादत खाना में धर्म की चर्चाएं की।

इबादतखाने में चर्चा

उसने मौलवियों से कहा, "मेरा एक ही उद्देश्य है - सच्चाई का पता लगाना, धर्म के सही सिद्धांतों को उजागर करना।"

पर अकबर ने पाया कि मौलवी आपस में बहुत गाली गलौच व झगड़े करने लगते थे। इस कारण उसका मन ऊब गया। सन् 1580 से उसने दूसरे कई धर्मों के विद्वानों व संतों को चर्चा के लिए इबादत खाना में बुलाना शुरू किया। हिन्दू पंडित, सूफी संत, गुजरात के जैन मुनि, पारसी विद्वान और ईसाई धर्म के पादरी भी अकबर के निमंत्रण पर चर्चा करने वहां गए। ईसाई पादरी पुर्तगाल देश के उन व्यापारियों के साथ आया करते थे जो भारत से माल खरीदने आने लगे थे।

इन चर्चाओं से अकबर के मन पर बहुत असर पड़ा। उसका दरबारी व मंत्री अबुल फज़ल भी अपने विचारों से अकबर को प्रभावित करता था। (अबुल फज़ल ने ही अकबर के शासन पर किताबें लिखीं जिन्हें पढ़ कर हम आज उस समय के बारे में बहुत कुछ जान पाते हैं।)

अकबर के मन में धर्म के प्रति एक नया विचार बन गया। उस समय का एक इतिहासकार बदायुनी लिखता है, "इन चर्चाओं के फलस्वरूप बादशाह के मन में पत्थर की लकीर की तरह यह धारणा बन गई कि सब धर्मों में अच्छे लोग होते हैं। अगर सच्चा ज्ञान सब धर्मों में प्राप्त हो सकता है तो यह कहना ठीक नहीं है कि एक ही धर्म में सच्चाई है, बाकी धर्म झूठे हैं।"

इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर अकबर ने एक नई नीति अपनाई - सुलह कुल, यानी सब के बीच सुलह की नीति - "संपूर्ण रूप से शांति", सब धर्मों व संप्रदायों के बीच शांति की नीति।

इसी नीति का पालन करते हुए अकबर ने गोहत्या पर रोक लगा दी। अपने राजमहल में उसने हिन्दू, पारसी आदि धर्मों की कुछ रीतियां माननी शुरू कर दी। उसने अलग-अलग धर्मों के मुख्य ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद करवाया। गीता, महाभारत, अथर्ववेद, बाइबल, कुरान, पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी व विज्ञान की भी कई पुस्तकें फारसी में अनुवाद की गईं ताकि फारसी बोलने वाले मुसलमान उन्हें पढ़ कर समझ सकें।

इस्लाम धर्म की कई ऐसी बातों को उसने छोड़ दिया जो उसे ठीक नहीं लगी।

अकबर की सुलह कुल नीति मुग़ल साम्राज्य के लिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि अकबर के अमीरों में सब धर्मों के लोग थे। उन सब को मिल कर राज्य का कामकाज चलाना था। उसके राज्य में लाखों मुसलमान

थे पर अधिकतर छोटे-छोटे अधिकारी व कर्मचारी हिन्दू ही थे। भारत के अधिकतर किसान, कारीगर व ज़मीदार हिन्दू थे। व्यापारी वर्ग के लोग हिन्दू ,जैन या पारसी धर्म मानते थे।

इतने बड़े राज्य के लिए इन सब लोगो का समर्थन चाहिए था। तभी राज्य का काम ठीक से और शांति से चल पाता। सुलह कुल नीति से सब तरह के लोगो के मन को बादशाह के प्रति खीचा जा सका। इसी नीति को अकबर के बाद आने वाले मुग़ल बादशाहो ने भी अपनाया।

o o o o

अकबर के कहने पर रहीम ने रामायण का फारसी मे अनुवाद किया। उस पुस्तक मे यह चित्र बना हुआ है। यह कौन सा दृश्य है?

अभ्यास के प्रश्न

1. जब अकबर बादशाह बना तब अमीरो मे कौन-कौन लोग थे? अकबर ने अपने शासन काल में किन-किन लोगो को अमीर बनाया?
2. तुरानी अमीर क्या चाहते थे और अकबर क्या चाहता था - छांट कर अलग-अलग लिखो
   क. अमीरो को बादशाह के समान अधिकार मिले।
   ख. अमीर अपनी जागीरो का संचालन बादशाह के नियमो के अनुसार करें।
   ग. बादशाह अमीरो के कहने पर चले।
   घ. सारी शक्ति बादशाह मे केंद्रित रहे।
3. राजपूत राजाओ को अपना अमीर बनाने के लिए अकबर ने उन्हे कौन-कौन सी छूट दी?
4. सही गलत बताओ :-
   क. अकबर ने जो रियायते दी - उससे प्रभावित होकर अधिकांश राजपूत राजा उसके अमीर बनने के लिए तैयार थे।
   ख. अधिकांश राजपूत राजा अकबर से मिली रियायतो के बावजूद उसके अमीर नही बनना चाहते थे, क्योकि स्वतंत्र रूप से राज्य करना चाहते थे।
5. राजपूतो और भारतीय मुसलमानो के अमीर बनने से ईरानी और तुरानी अमीर परेशान क्यो हो गये - अपने शब्दो मे समझाओ।
6. अकबर ने 1563 मे जज़िया कर समाप्त क्यो किया?
   1575 में अकबर ने जज़िया कर को फिर से लागू क्यों किया?
   1580 में उसने जज़िया कर को फिर से क्यो हटाया?
7. धार्मिक चर्चाओं से अकबर ने क्या निष्कर्ष निकाला ?
8. सुलह-कुल की नीति के अनुसार अकबर ने क्या-क्या कदम उठाये ? ये उसके राज्य के लिये क्यो ज़रूरी थे ?

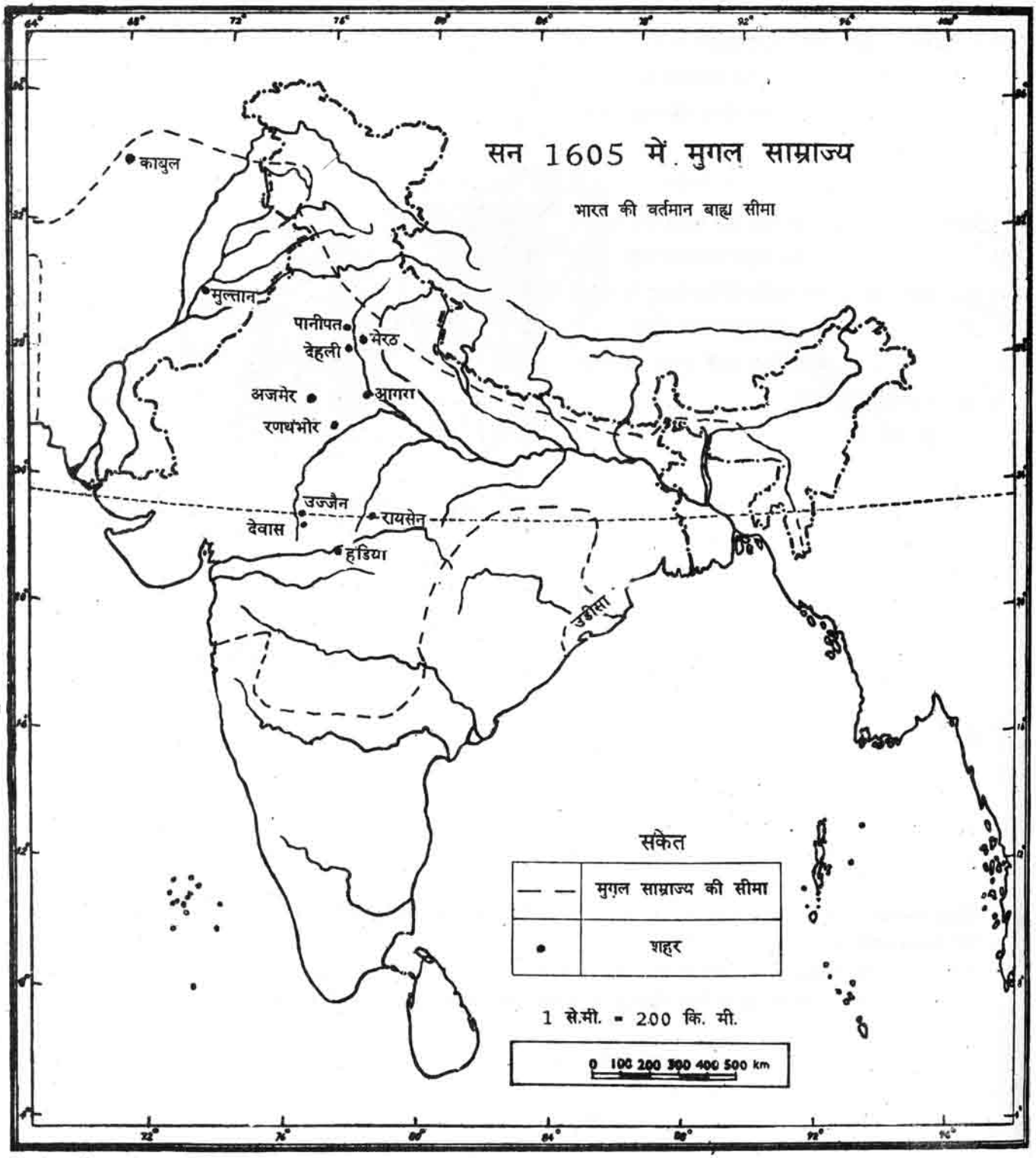

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1987.

The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line

Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.

© Government of India copyright, 1987.